स्वर संधि के भेद - ⑤

1. दीर्घ संधि -

शॉर्ट ट्रिक - जहाँ दो एक जैसे अर्थात् सजातीय वर्णों का मेल हो।

विद्यार्थी, हिमालय, देवालय.

विद्या + अर्थी — आ + अ = आ

हिम + आलय — अ + आ = आ

देव + आलय — अ + आ = आ

② यण संधि – (अन्तःस्थ वर्ण) ⇒ य, र, ल, व

(1) जहाँ शब्द के बीचोंबीच य, र, ल, व वर्ण हो तथा इनसे पहले कोई आधा व्यंजन हो।

(2) जहाँ किन्ही दो स्वर वर्णों के योग से य, र, ल, व वर्ण बनें।

अध्यक्ष, अध्यादेश, प्रत्यक्ष, अत्याचार, इत्यादि, यद्यपि

संधि विच्छेद ⇒ अधि + अक्ष, अधि + आदेश, प्रति + अक्ष, अति + आचार, इति + आदि, यदि + अपि

इ + अ = य, ई + आ = या, इ + अ = य, इ + आ = या, इ + आ = या, इ + अ = य

प्रत्याहार , न्यून , प्रत्येक ,

प्रति + आहार , नि + ऊन , प्रति + एक

इ + आ = या   इ + ऊ = यू   इ + ए = ये

य । या । यू । ये

निरर्थक शब्द ⇒ { नगर xxxx
लवण xxxx
कमल — — —

→ सार्थक शब्द — — —

मात्राज्ञा , पित्रादेश , मात्रादेश , पित्राज्ञा = र।रा

मातृ + आज्ञा , पितृ + आदेश , मातृ + आदेश , पितृ + आज्ञा

ऋ + आ = रा   ऋ + आ = रा   ऋ + आ = रा   ऋ + आ = रा

स्वागत, अन्वेषण, अन्वय   व | वा | वे

सु + आगत, अनु + एषण, अनु + अय

उ + आ = वा   उ + ए = वे   उ + अ = व

③ गुण संधि -

1. जहाँ शब्द के बीचोंबीच एक मात्रा ए, ओ (२) की हो।

2. जहाँ किन्ही दो स्वर वर्णों के योग से ए, ओ, अर् वर्ण बने।

V V

2 3

3. जहाँ -

(i) अ + इ = ए

(ii) अ + उ = ओ

(iii) अ + ऋ = अर्

(हलन्त चिह्न)

रमेश , सुरेश , नरेश , महेश , गणेश , राकेश , योगेश = ए

रमा + ईश , सुर + ईश , नर + ईश , महा + ईश , गण + ईश , राका + ईश , योग + ईश

आ + ई = ए अ + ई = ए अ + ई = ए आ + ई = ए अ + ई = ए आ + ई = ए अ + ई = ए

अ + इ = ए

अ + ई = ए

आ + इ = ए

आ + ई = ए

नरेन्द्र, सुरेन्द्र, हरेन्द्र, गजेन्द्र, महेन्द्र, राजेन्द्र, योगेन्द्र – ए

नर + इन्द्र, सुर + इन्द्र, हर + इन्द्र, गज + इन्द्र, महा + इन्द्र, राज + इन्द्र, योग + इन्द्र

अ + इ = ए अ + इ = ए अ + इ = ए अ + इ = ए आ + इ = ए अ + इ = ए अ + इ = ए

A अ + इ

अइ